श्रीगंधा

केआईओसीएल लिमिटेड की
राजभाषा ई-पत्रिका

हिंदी पखवाड़ा -2020
'परिशिष्टांक'

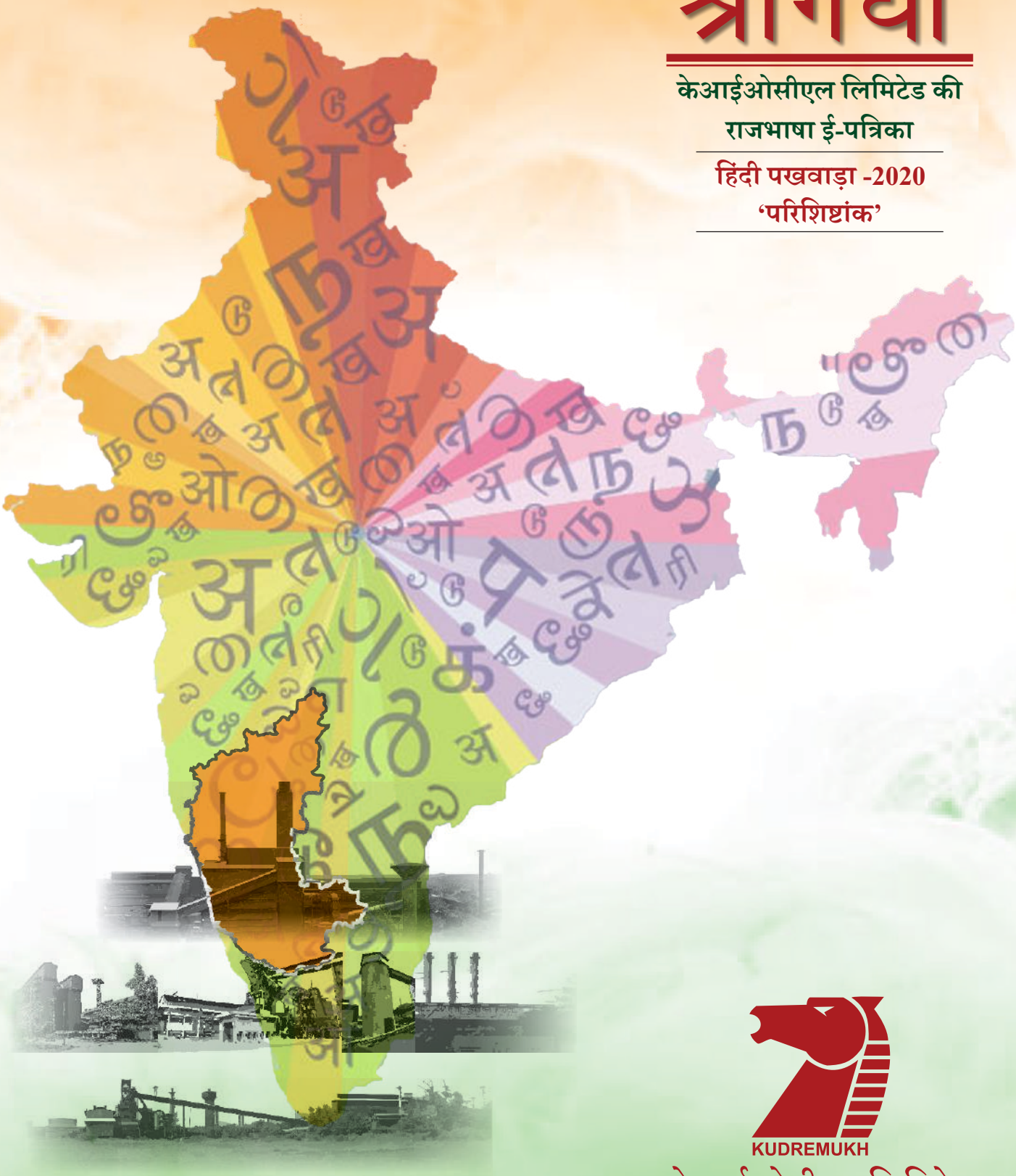

KUDREMUKH
केआईओसीएल लिमिटेड

'हिंदी का सम्मान - भारतीयता की पहचान'

स्वच्छ, स्वस्थ और हरित पर्यावरण के निर्माण में
केआईओसीएल का निरंतर योगदान

पर्यावरण
के लिए सदैव

सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों जैसे - आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 एवं ओएचएसएएस 18001:2007 का अनुपालन करते हुए केआईओसीएल ने लौह अयस्क खनन, अनुलाभीकरण, पैलेटीकरण और फाउंड्री श्रेणी के पिग आयरन के निर्माण में 4 दशक से अधिक का सफ़र तय किया है। केआईओसीएल देश के लिए निरंतर मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित कर राज्य और केंद्र के राजकीय-कोष में योगदान दे रहा है।

केआईओसीएल राष्ट्रीय इस्पात नीति 2017 के अनुरूप वित्त वर्ष 2030 तक 300 मिलियन टन की इस्पात-क्षमता को प्राप्त करने के लिए एक सक्रिय भागीदार की भूमिका में है। केआईओसीएल ने कुद्रेमुख क्षेत्र में खान के बहाव एवं मिट्टी के कटाव की रोकथाम के लिए पहले ही 7.5 मिलियन से अधिक का पौधारोपण किया है। सीएसआर के अंतर्गत कंपनी, स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास, शिक्षा, पेय-जल, स्वच्छता एवं स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय अभियान हेतु पर्याप्त राशि व्यय कर रही है। केआईओसीएल एक शून्य उत्सर्जन कंपनी के रूप में लगातार पर्यावरण की दीर्घकालिकता के लिए भी योगदान कर रहा है।

पैलेट संयत्र

पैलेट स्टॉक यार्ड

पैलेट नौलदान

KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015 तथा ओएचएसएएस 45001:2018 कंपनी

॥ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूरु - 560034

वेबसाइट : www.kioclltd.in

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

संदेश

मंत्री
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस ;
इस्पात मंत्रालय

हिंदी दिवस के अवसर पर इस्पात उद्योग से जुड़े सभी कर्मियों और संस्थाओं को हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत जैसे सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण देश में अनेक भाषाएं और बोलियां प्रचलित हैं। इनमें से 22 प्रमुख भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्रदान की गई है। परंतु देश का शासन देश की अपनी भाषा में चले, इसी भावना को केंद्र में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित किया और संविधान में हिंदी के संबंध में विभिन्न महत्वपूर्ण प्रावधान भी किए।

इन दिनों विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है। ऐसे समय में सूचना तकनीक काम–काज के निष्पादन के लिए वरदान साबित हुई है। आज हिंदी भी सूचना तकनीक के साथ कदम से कदम मिला कर चल रही है। यूनिकोड फॉन्ट के आ जाने और हिंदी में टंकण के बहुत से विकल्पों के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना अत्यंत सरल हो गया है। आवश्यकता इच्छाशक्ति की है। सरकारी काम–काज में सूचना तकनीक के माध्यम से हिंदी का प्रयोग किए जाने से हम प्रशासन और जनता के बीच संवाद को और अधिक सार्थक और सुदृढ़ बना सकेंगे। मंत्रालय के और इसके विभिन्न उपक्रमों के अधिकारी और कर्मचारी हिंदी दिवस के अवसर पर यह संकल्प लें कि वे अपना सरकारी काम–काज राजभाषा हिंदी में करेंगे और अपने सह–कर्मियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे।

हिंदी में कार्य करने के लिए अनुवाद पर निर्भर रहने के बजाय मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है उन्हें अपना समस्त कार्य हिंदी में करके उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए जबकि हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों को अपना कार्य हिंदी में करने के लिए अपेक्षित प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने की योग्यता के साथ–साथ उन्हें वॉइस टाइपिंग जैसी ऑनलाइन सुविधा का प्रयोग करते हुए अपना अधिकतम कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए। जिन अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी टाइपिंग का ज्ञान नहीं है, उन्हें माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल जैसी सुविधाओं का लाभ उठाकर अंग्रेजी कीबोर्ड से हिंदी में टाइप करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

इस्पात मंत्रालय 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2020 के दौरान सामाजिक दूरी का अनुपालन करते हुए ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा मना रहा है। ये एक अभिनव प्रयास है। मैं आशा करता हूँ कि इस दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में मंत्रालय के अधिकारी और कर्मचारी उत्साहपूर्वक अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इन्हें सफल बनाने में अपना योगदान देंगे। मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों से भी अपेक्षा है कि वे भी अपने कार्यालयों में इसी प्रकार के आयोजन के माध्यम से अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे।

उद्योग भवन, नई दिल्ली
दिनांक 14 सितंबर, 2020

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

(धर्मेंद्र प्रधान)

सत्यमेव जयते

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

संदेश

इस्पात राज्य मंत्री
भारत सरकार

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी भारत के जन–जन की अभिव्यक्ति की भाषा है। हिंदी ने हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया है तथा अनेकता में एकता की भावना को जीवंत बनाए रखा है। वस्तुतः सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधताओं वाले हमारे देश को एक सूत्र में बांधने में हिंदी की भूमिका अतुलनीय है। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। अतः 14 सितंबर को हम प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

यह सर्वविदित है कि राष्ट्र के निर्माण में हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। आज राजभाषा हिंदी आपस में संपर्क का एक महत्वपूर्ण माध्यम ही नहीं है बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की भाषायी पहचान है। हमें एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जिसमें शासन और जनता के मध्य दूरी न हो। हर देशवासी स्वयं को व्यवस्था का अभिन्न अंग समझे और यह तभी संभव है जब हम पूरी निष्ठा के साथ हिंदी को अपने दैनिक काम–काज और व्यवहार का हिस्सा बनाएंगे। यह हमारा संवैधानिक दायित्व भी है कि हम अपने सरकारी काम–काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

केवल हिंदी दिवस या पखवाड़ा जैसे आयोजनों तक ही हिंदी को सीमित रखने से हम इस लक्ष्य को हासिल नहीं कर पाएंगे। हमें इसे हृदय से अपनाना होगा। सरकारी काम–काज में भी अनुवाद पर निर्भर रहने की बजाय हमें मूल रूप से हिंदी में कार्य करना चाहिए। इससे न केवल हमारी भाषा सहज और सरल बनी रहेगी बल्कि मौलिक रूप से हिंदी में कार्य करने से हम भी धीरे–धीरे हिंदी भाषा में कार्य करने के प्रति सहज होते जाएंगे। आज आधुनिक तकनीकों जैसे कि यूनिकोड टाइपिंग टूल, विभिन्न अनुवाद टूलों, वॉइस टाइपिंग का उपयोग किया जाने लगा है, जिससे राजभाषा हिंदी में कार्य करना काफी सहज और आसान हो गया है। आवश्यकता एक बार सच्चे मन से शुरुआत करने की है। निस्संदेह अपनी भाषा में कार्य करने पर आपको एक सुखद अनुभव होगा।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी अपने कार्यालयों में सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे और देश को विकास के पथ पर अग्रसर करने में भागीदार बनेंगे।

पुनः हिंदी दिवस की शुभकामनाओं सहित।

(फग्गन सिंह कुलस्ते)

उद्योग भवन, नई दिल्ली
दिनांक 14 सितंबर, 2020

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राजीव गौबा
Rajiv Gauba

सत्यमेव जयते

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

मंत्रिमंडल सचिव
भारत सरकार
CABINET SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी आज जन - जन की भाषा बन चुकी है। हमारे देश के अधिकांश भूभाग पर बोली जाने वाली हिंदी अब केवल राजभाषा एवं संपर्क भाषा ही नहीं है बल्कि वह विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भाषा के इसी स्वरूप एवं राष्ट्र निर्माण में हिंदी के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए हमारी संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। इसी दिन से हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाते हैं।

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग पहले की तुलना में अब काफी बढ़ रहा है। फिर भी हमें इसके उत्तरोत्तर प्रयोग को और अधिक बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि उच्च अधिकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए उत्साहवर्धक एवं अनुकूल वातावरण बनाएं तथा सरकारी कार्यों में हिंदी में मूल लेखन को प्रोत्साहित करें। अधिकारी/कर्मचारी टिप्पणियां एवं मसौदे इत्यादि मूल रूप से हिंदी में तैयार करने एवं हिंदी में पत्राचार को बढ़ाने का प्रयास करें। साथ ही हम अपने सरकारी कार्यों में सहज एवं सरल हिंदी के प्रयोग पर भी बल दें।

आइए, "हिंदी दिवस" के इस पावन अवसर पर हम पुनः सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए स्वयं को समर्पित करें।

जय हिंद।

14 सितंबर, 2020

(राजीव गौबा)

एम वि सुब्बा राव
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

मेरे प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर समस्त केआईओसीएल कर्मियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !!

भारत जैसे विशाल देश में जहां उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम अनेकों भाषाएं व बोलियां बोली जाती हैं, हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हिंदी ही ऐसी भाषा है जो सहज, सरल एवं सर्वग्राही है, जो भारत देश को एकसूत्र में पिरोये रखती है और प्रत्येक भारतवासी को एक दूसरे के निकट लाने वाली भाषा के रूप में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया जाना सर्वथा उपयुक्त है। प्रतिवर्ष 14 सितंबर के दिन हम अपनी सामूहिक चेतना को जागृत कर एक नया संकल्प लेते हैं कि हम अपने देश की एकता, अस्मिता और सर्वसामान्य आदमी को शासनतंत्र से जोड़ने के लिए राजभाषा को सहज व सरल हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग द्वारा लोकप्रिय भाषा के रूप में तब्दील करने में सफल सिद्ध होंगे।

भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी दिवस के प्रति वर्ष आयोजन का ही सार्थक परिणाम है, हिंदी की प्रगति। देश में व्याप्त वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हम इस वर्ष अधिकांश कार्यक्रमों को ऑनलाइन करने के माध्यम से दिनांक 14 सितंबर, 2020 से 28 सितंबर, 2020 के मध्य अपने केआईओसीएल में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन करेंगे।

सभी कार्मिकों से मेरी अपील है कि इन कार्यक्रमों में सोशल डिस्टेंसिंग के मानकों का पालन करते हुए जुड़े व हिंदी की प्रगति की सफल कहानी लिखने में अपना योगदान दें।

जय हिंद, जय हिंदी...

एम वि सुब्बा राव

(एम वि सुब्बा राव)

स्वपन कुमार गोराई
निदेशक (वित्त)

आप सभी केआईओसीएल कर्मियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जिस तरह से इस्पात प्रत्येक आदमी के जीवन से किसी ना किसी रूप में जुड़ा हुआ है उसी प्रकार भाषा भी कहीं ना कहीं प्रतीक मनुष्य से जुड़ी होती है और जोड़े रखने का कार्य करती है। भारत की राजभाषा हिंदी प्रत्येक भारतीय को जिस प्रकार से जोड़ती है उसी कारण से यह देश में आम आदमी की आवाज़ बन सकी है। सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हमें अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए एक विस्तार प्रदान करता है।

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर मैं कामना करता हूं कि हम केआईओसीएल में अपने अधिक से अधिक दैनंदिन कार्य को हिंदी में करने की शपथ लेते हुए मूल कार्य में सरल सहज हिंदी का हर संभव प्रयास करें। छोटी- छोटी निधि के संचय से जिस प्रकार हमारे कोष में वृद्धि होती है उसी प्रकार प्रतिदिन हिंदी से जुड़ी छोटी- छोटी पहल भी राजभाषा की प्रगति व विकास में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है।

आइए ! हम सभी हिंदी पखवाड़ा, 2020 के क्रम में प्रत्येक पहल में हिंदी का संकल्प लेकर आगे बढ़े।

स्वपन

(स्वपन कुमार गोराई)

टी सामिनाथन
निदेशक (वाणिज्य)

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!!

भारत की विशाल भौगोलिक सीमा में एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच जलवायु में बदलाव के साथ भाषा में भी अत्यंत विविधता है। इन विविधताओं को एकता में तब्दील करने वाली भाषा है हिंदी।

भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी में यथासंभव कार्य करने का संकल्प लेने का दिन है- 14 सितंबर हिंदी दिवस।

आइए ! हम अपने केआईओसीएल में इस संकल्प को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़े। हिंदी से जुड़े और हिंदी को जोड़ें।

टी. सामिनाथन

(टी सामिनाथन)

के वी भास्कर रेड्डी
निदेशक (उत्पादन एवं परियोजनाएं)

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

अपने केआईओसीएल का संयंत्र कार्यालय भी एक छोटे से हिंदुस्तान की तरह ही मुझे लगता है, जहाँ भारत के हर छोर का प्रतिनिधित्व दिखता है। इस विविधतापूर्ण प्रतिनिधित्व को एकता में तब्दील करने वाली कोई कड़ी है तो वह राजभाषा हिंदी है।

हिंदी दिवस का दिन हिंदी में सरकारी कामकाज को करने के लिए सकारात्मक संकल्प लेने का दिन है।

आइए ! हम सभी हिंदी में कार्य करने की शुरुआत करें ताकि सभी कार्य हिंदी में करने की स्थितियां बनें।

के वी भास्कर रेड्डी

(के वी भास्कर रेड्डी)

एस राजेंद्र
महा प्रबंधक (मानव संसाधन)

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

आज जब हम दुनिया के अन्य देशों में हिंदी का व्यापक प्रसार देखते हैं तो लगता है कि भारत में हमें और अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। वस्तुतः भारत सरकार की राजभाषा नीति जिस प्रेरणा और प्रोत्साहन के बल पर गति से प्रगतिशील है उसी का नतीजा है तकनीकी रूप से सुविधाओं का जोड़ते जाना।

आज वह समय बीत गया जब श्रुतलेखन, टंकण जैसे निगमित किए जाने वाले कार्य के लिए भी योग्य और अनुभवी कार्मिक मुश्किल से मिलते थे अपितु वर्तमान समय में तकनीक से जुड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति परस्पर भिन्न भाषा में भी सूचनाओं का आदान प्रदान उसी सरलता और सहजता से कर सकता है मानो यह उसकी अपनी मूल मातृभाषा हो।

आज हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अपने संगठन केआईओसीएल में राजभाषा हिंदी की स्थिति के संबंध में अभिव्यक्त करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। तकनीक से जुड़कर अपने संगठन में भी हमने कार्मिकों के लिए प्रयोक्ता हितैषी टूल्स उपलब्ध कराने के साथ उससे जुड़ी कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से कार्मिकों को अद्यतित किया है।

अपने राजभाषाई प्रयासों के दम पर हम पर स्वयं को एक सुविधाजनक स्थिति में पाते हैं जहां राजभाषा के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में हमारे कदम मजबूती से जुड़े हुए हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम अपने संकल्प से विचलित हुए बिना हिंदी में कार्य के लिए हर संभव हर संभव प्रयास जारी रखेंगे और भारत के राष्ट्रपति महात्मा गांधी की उक्ति 'जनता की बात जनता की भाषा में होनी चाहिए' को चरितार्थ करेंगे।

हिंदी दिवस के आयोजन के साथ संगठन में दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2020 के दौरान आयोजित होने वाली गतिविधियों के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं...

एस राजेंद्र
(एस राजेंद्र)

एस रजनीश कुमार
उप प्रबंधक (राजभाषा)

हिंदी पखवाड़ा की उपलब्धियों व गतिविधियों को समाहित करते हुए 'श्रीगंधा' के इस परिशिष्टांक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। वर्तमान में वैश्विक संकट के रूप में कोरोना ने पूरी दुनिया के समक्ष जिस तरह की चुनौतियां प्रस्तुत की हैं उन्हीं चुनौतियों के प्रति-उत्तर के रूप में दुनिया एक नए रूप में तैयार हो रही है। नए-नए शब्दों से रूबरू होने के साथ-साथ हम नए-नए लोकाचारों के आदी हो रहे हैं। बैठकों सम्मेलनों के वेबिनारों में बदलने के साथ कक्षाओं के भी ऑनलाइन क्लास में तब्दील होने से एक नए विश्व का निर्माण हो रहा है। हमारी कामना है कि दो गज की दूरी ही सही पर दो गज में दुनिया सिमट जाने से पूरी मानवता बची रहे। कोरोना वायरस के लॉकडाउन ने पूरी दुनिया को ही लॉक कर दिया है इस लॉकडाउन के बीच कुछ अनलॉक रह गया है तो वह है हमारी रचनात्मकता, सृजनात्मकता और सकारात्मकता। यही हमें जीवनी शक्ति प्रदान कर रही है। आपदा को अवसर में तब्दील करते हुए आत्मनिर्भर बनने की, सोशल डिस्टेंसिंग के बीच सोशल मीडिया के द्वारा सोशिअलाइज होने की; और भौतिक दूरी बरकरार रखते हुए आभासी नजदीकी बढ़ाने की।

इस्पात मंत्रालय के एक उत्कृष्ट मिनीरत्न उपक्रम के रूप में अपनी जिजीविषा के दम पर हमने अपनी संवेदनाओं का लॉकडाउन नहीं होने दिया है और अपने सूत्रवाक्य इस्पात इरादा से ही हर काम हर काम देश के नाम को चरितार्थ करते हुए प्रस्तुत हैं 'श्रीगंधा' के इस परिशिष्टांक के साथ।

इस अंक में उल्लेखनीय रूप से हिंदी दिवस के संदेशों की पुनर्प्रस्तुति और स्टाफ सदस्यों के द्वारा हिंदी पखवाड़ा के दौरान व्यक्त उद्गारों को प्रस्तुत करने का एकमात्र उद्देश्य है, अपनी राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्य को करने के लिए प्रभावी प्रेरणा और प्रोत्साहन का प्रसार। यह पारस्परिक है और इसमें स्टाफ सदस्यों की सहभागिता से हम ज्यादा सीखते हैं। इसी सीखने और सिखाने के क्रम से हम उत्तरोत्तर अपना बेहतर दे पाने का हौसला बनाए रख पाते हैं।

इस अंक से जुड़ी प्रतिक्रियाओं सहित राजभाषा हिंदी में काम को आसान बनाने से जुड़ी हर जिज्ञासा का स्वागत है। हमारा हरसंभव प्रयास रहेगा कि हम बेहतर से बेहतरीन समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम सिद्ध हों।

रजनीश कुमार

(एस रजनीश कुमार)

हिंदी का जादू, हिंदी की शक्ति

"कोटि-कोटि कंठों की भाषा

जन मन की मुखरित अभिलाषा

हिंदी है पहचान हमारी

हिंदी है हम सब की परिभाषा।"

भारत की विशालता विश्व - विदित है। जब अलग-अलग भाषा को बोलने वाले दो भारतीय परस्पर मिलते हैं तो वे एक दूसरे के लिए अजनबी दिखाई देते हैं। तब जो भाषा उनके विचारों में व्यवहार में सहायक हो सकती है तो वह है अपनी 'राजभाषा' हिंदी। भारत में राजभाषा होने का गौरव पद हिंदी को प्राप्त है। हिंदी को राजभाषा घोषित करने का प्रमुख तर्क यह रहा कि हिंदी एक अविरल भारतीय भाषा है, दूसरे जितनी संख्या यहां हिंदी बोलने वालों की है उतनी किसी और प्रांतीय भाषा की नहीं थी, तीसरे हिंदी समझना अपेक्षाकृत आसान है। देश के प्रत्येक अंचल में हिंदी सरलता से समझी जाती है भले ही लोग बोल ना सके, चौथी बात यह है कि हिंदी भाषा अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में कहीं न कहीं सरल है। इसमें शब्दों का प्रयोग तर्कपूर्ण है। यह भाषा दो-तीन महीनों के अल्प समय में सीखी जा सकती है। इसकी पाँचवी विशेषता यह है कि इसकी लिपि वैज्ञानिक है, सुबोध है। यह भाषा जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक सभी प्रकार के व्यवहारों के संचालन की पूर्ण क्षमता है। इन सभी विशेषताओं के कारण भारतीय संविधान सभा के सदस्यों ने यह निश्चय किया कि हिंदी को भारत की राजभाषा बनाया जाए।

भारत में हिंदी की महत्ता को इस बात से भी आँका जा सकता है कि एक बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबेल पुरस्कार मिलने के बाद उन्हें गुजरात में व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया था। गुरुदेव ने महात्मा गांधी को पत्र लिखा कि उन्हें गुजराती नहीं आती, अंग्रेजी में थोड़े लोग समझ पाएंगे, हिंदी आती है लेकिन ज्यादा नहीं और स्त्रीलिंग - पुल्लिंग की गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। महात्मा गांधी ने सुझाया आप हिंदी में ही व्याख्यान दें, तभी बात बनेगी गुरुदेव ने ऐसा ही किया, उन्हें ऐसी शानदार सराहना मिली कि वे स्वयं चकित थे।

एक अन्य दृष्टांत स्वामी दयानंद सरस्वती जिन दिनों आर्यसमाज के प्रचार- प्रसार में लगे थे, उन्हीं दिनों उनके एक करीबी शुभचिंतक ने सुझाया कि यदि आपको आर्यसमाज को गांव-गांव तक पहुंचाना है तो संस्कृत के स्थान पर हिंदी में प्रवचन दे। स्वामी दयानंद ने सुझाव माना और हिंदी के जादू से आर्यसमाज सचमुच गांव-गांव तक पहुंच गया। जिस दिन ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने पांव जमा रही थी, ब्रिटिश सरकार ने 'एडवर्ड टेरी' नामक विद्वान को भारत भर का दौरा करके यह बताने को कहा कि शासन के लिए कौन सी भाषा उपयुक्त रहेगी और टेरी ने देश भर का भ्रमण करके हिंदी को सर्वाधिक उपयुक्त भाषा बताया था। हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने भी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वपन देखा था, जबकि उनकी स्वयं की मातृभाषा हिंदी नहीं थी- लोकमान्य तिलक की मातृभाषा मराठी, लाला लाजपत राय की पंजाबी, महात्मा गांधी की गुजराती, सुभाषचंद्र बोस की बांग्ला, पंडित नेहरू की कश्मीरी, सरदार पटेल की गुजराती, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की तमिल। यही हिंदी का जादू है, यही हिंदी की शक्ति है। स्वाधीन भारत में हिंदी की दुर्दशा की ओर ध्यान दें तो हम पाते हैं कि जो लोग हिंदी बोलना जानते हैं वे भी अंग्रेजी बोलकर मिथ्याभिमान का प्रदर्शन करते हैं किंतु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यवहार में हिंदी हीनता का नहीं अपितु गौरव का प्रतीक है।

चंदा रानी

राजभाषा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा

भारत सरकार के कार्यालयों में प्रति वर्ष दिनांक 14 सितंबर को हिंदी दिवस के समारोहपूर्वक आयोजन के साथ हिंदी सप्ताह, हिंदी पखवाड़ा, हिंदी माह मनाने की संवैधानिक परंपरा है। भारत सरकार के एक उत्कृष्ट मिनीरत्न उपक्रम के रूप में केआईओसीएल में भी दिनांक 14-28 सितंबर, 2020 के मध्य हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

इस वर्ष वैश्विक महामारी कोविड-19 को देखते हुए राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन के आधार पर केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों, मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों को यथासंभव ऑनलाइन तरीके से आयोजित किए जाने के निर्देशों का सम्यक पालन करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा तय की गई।

हिंदी दिवस का उद्घाटन समारोह दिनांक 14.09.2020 को ऑनलाइन माध्यम से अपराह्न अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में अपराह्न 3.30 बजे किया गया। उद्घाटन समारोह के क्रम में हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, माननीय केंद्रीय इस्पात मंत्री, माननीय केंद्रीय इस्पात राज्य मंत्री के संदेशों के पाठ के साथ मंत्रिमंडल सचिव के संदेश का पाठ किया गया। उपक्रम की राजभाषा ई-गृह पत्रिका 'श्रीगंधा' को जारी किया गया। उद्घाटन समारोह के साथ ही अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, केआईओसीएल के संदेश का प्रदर्शन पखवाड़ा अवधि के दौरान डिस्प्ले पैनलों पर किया गया। इस वर्ष हेतु राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय के कार्यालय ज्ञापन के आधार पर पखवाड़ा के दौरान कुछ प्रमुख सूक्तियों पोस्टर/बैनर/स्टैंडी अथवा एक-दो डिजीटल डिस्प्ले बनवाए जाने का निर्देश था तदनुसार एक थीम "हिंदी का सम्मान - भारतीयता की पहचान" तय कर बैनर व डिजिटल डिस्प्ले की सामग्री तैयार की गई व उन्हें डिजिटल डिस्प्ले बोर्डों पर प्रदर्शित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के क्रम में राजभाषा के प्रति कार्मिकों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई:

1. 15.09.2020 हिंदी प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता
2. 16.09.2020 हिंदी सुलेख प्रतियोगिता
3. 17.09.2020 हिंदी निबंध प्रतियोगिता
4. 18.09.2020 हिंदी चित्रकथा प्रतियोगिता
5. 21.09.2020 हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रस्तुत है पखवाड़ा अवधि के दौरान संपन्न कार्यक्रमों की झलकियां और समापन समारोह के रूप में प्रतिभागिता सम्मान समारोह की तस्वीरें

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान
हिंदी

सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

हिंदी का सम्मान भारतीयता की पहचान

का सम्मान भारतीयता की पहचान
हिंदी

का सम्मान भारतीयता की पहचान
हिंदी

भारतीयता की पहचान

भारतीयता की पहचान

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
1.		के वी भास्कर रेड्डी	सुलेख प्रतियोगिता
2.		एस राजेंद्र	सुलेख प्रतियोगिता
3.		सौमेन दास गुप्ता	सुलेख प्रतियोगिता
4.		जी वी किरण	सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
5.		शंकर कर्णम	सुलेख प्रतियोगिता, और चित्रकथा प्रतियोगिता
6.		सुनीता आर	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
7.		श्रीप्रकाश	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
8.		एन एस रवीन्द्रनाथ	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता
9.		आर मंजेश	सुलेख प्रतियोगिता
10.		अरविंद विजय आर	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
11.		रामकृष्ण मिश्रा	सुलेख प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
12.		पूर्ण चंद जेना	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
13.		कृष्णमूर्ति एम	सुलेख प्रतियोगिता
14.		पुष्पकांत मिश्रा	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता
15.		विकास अग्रवाल	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
16.		सुब्रमण्यम भट्ट एम	सुलेख प्रतियोगिता
17.		एच एस अनिल कुमार	सुलेख प्रतियोगिता
18.		एम केसवेल	सुलेख प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता
19.		सौम्या रानी ए	चित्रकथा प्रतियोगिता
20.		एम निर्मल कुमार	सुलेख प्रतियोगिता
21.		चेतन कुमार शेट्टी	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
22.		जगदीश के एन	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
23.		शेखर टी वी	सुलेख प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
24.		एल आनंद मूर्ति	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
25.		वादिराज राव	सुलेख प्रतियोगिता
26.		बी अनंतलक्ष्मी	सुलेख प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
27.		के योगीश कुमार	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
28.		बंडारू ईश्वर	सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
29.		चिन्मय पात्र	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता तथा चित्रकथा प्रतियोगिता ।
30.		एम कार्तिकेयन	सुलेख प्रतियोगिता
31.		गोविंद भोवि	सुलेख प्रतियोगिता
32.		भवानी शंकर अग्रवाल	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
33.		वसंत कुमार	सुलेख प्रतियोगिता
34.		अंकुर सक्सेना	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
35.		याचना गुप्ता	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
36.		हिमांशु बंसल	सुलेख प्रतियोगिता
37.		नविलेश एन	सुलेख प्रतियोगिता
38.		विजया एस पवाडे	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
39.		पी एस मतिअलगन	सुलेख प्रतियोगिता
40.		एच गीता	सुलेख प्रतियोगिता
41.		सी एन शशिकला	सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
42.		टविंकल भाटिया	सुलेख प्रतियोगिता
43.		रेणुका एम	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
44.		पी शेखर	सुलेख प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता
45.		बी नरसिंह	सुलेख प्रतियोगिता निबंध प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता
46.		बी रमेश बाबू	सुलेख प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता
47.		हंसा एम	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
48.		शेषाद्रि बी एन	सुलेख प्रतियोगिता
49.		एम मुनिराजू	सुलेख प्रतियोगिता और प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता
50.		के सी देवेगौड़ा	सुलेख प्रतियोगिता
51.		जे श्याम चल्लैया	सुलेख प्रतियोगिता और चित्रकथा प्रतियोगिता
52.		श्रीनिवास राव एन	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
53.		जगदीश एम	सुलेख प्रतियोगिता
54.		विनोद थॉमस	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता
55.		के षणमुगम	सुलेख प्रतियोगिता
56.		फ्रांसिस	सुलेख प्रतियोगिता
57.		सिद्धालिंग प्रसाद टी	सुलेख प्रतियोगिता
58.		षाषावली	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
59.		आर रमेश	सुलेख प्रतियोगिता

क्रम सं.		नाम	प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता
60.		जनकदेव कुमार सिंह	प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता, सुलेख प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकथा प्रतियोगिता तथा राजभाषा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता।
61.		रमेश तोवि	सुलेख प्रतियोगिता
62.		एन जयसिंह	सुलेख प्रतियोगिता, प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता
63.		टी आनंद कुमार	सुलेख प्रतियोगिता
64.		जी गुणशेखर	सुलेख प्रतियोगिता
65.		लक्ष्मीनारायण के	सुलेख प्रतियोगिता
66.		एच एस सत्यनारायण	सुलेख प्रतियोगिता
67.		फ्रांसिस डि'सोजा	सुलेख प्रतियोगिता
68.		रंगानाथ एस डी	सुलेख प्रतियोगिता

आपकी प्रतिभागिता का हार्दिक धन्यवाद ...

प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता परिणाम – 2020

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	कुल अंक	परिणाम
1	जनकदेव कुमार सिंह	80	प्रथम
2	श्री प्रकाश	77	द्वितीय
3	श्रीनिवास राव एन	70	तृतीय
4	योगीश कुमार के	69	सांत्वना – I
5	याचना गुप्ता	68.5	सांत्वना – II

सुलेख प्रतियोगिता परिणाम – 2020

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	कुल अंक	परिणाम
1	श्री प्रकाश	92	प्रथम
2	एस राजेंद्र	88	द्वितीय
3	के वी भास्कर रेड्डी	86	तृतीय
4	सुनीता आर	83	सांत्वना – I
5	बी नरसिंह	81	सांत्वना – II

निबंध प्रतियोगिता परिणाम – 2020

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	कुल अंक	परिणाम
1	गोविंद भोवि	70	प्रथम
2	श्री प्रकाश	69	द्वितीय
3	एन एस रविंद्रनाथ	67	तृतीय
4	चेतन कुमार शेट्टी	65	सांत्वना – I
5	एल आनंदमूर्ति	64	सांत्वना – II

चित्रकथा प्रतियोगिता परिणाम – 2020

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	कुल अंक	परिणाम
1	भवानी शंकर अग्रवाल	35	प्रथम
2	श्री प्रकाश	31	द्वितीय
3	सौम्या रानी ए.	29	तृतीय
4	हंसा एम	28	सांत्वना – I
5	चेतन कुमार शेट्टी	27	सांत्वना – II

राजभाषा हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता परिणाम – 2020

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	कुल अंक	परिणाम
1	भवानी शंकर अग्रवाल पूर्ण चंद्र जेना	75	प्रथम
2	योगिश एल आनंदमूर्ति	70	द्वितीय
3	श्री प्रकाश षाषावली	65	तृतीय

KUDREMUKH

केआईओसीएल लिमिटेड

॥ ब्लॉक,कोरमंगला

निगमित कार्यालय, बेंगलूरु - 560034

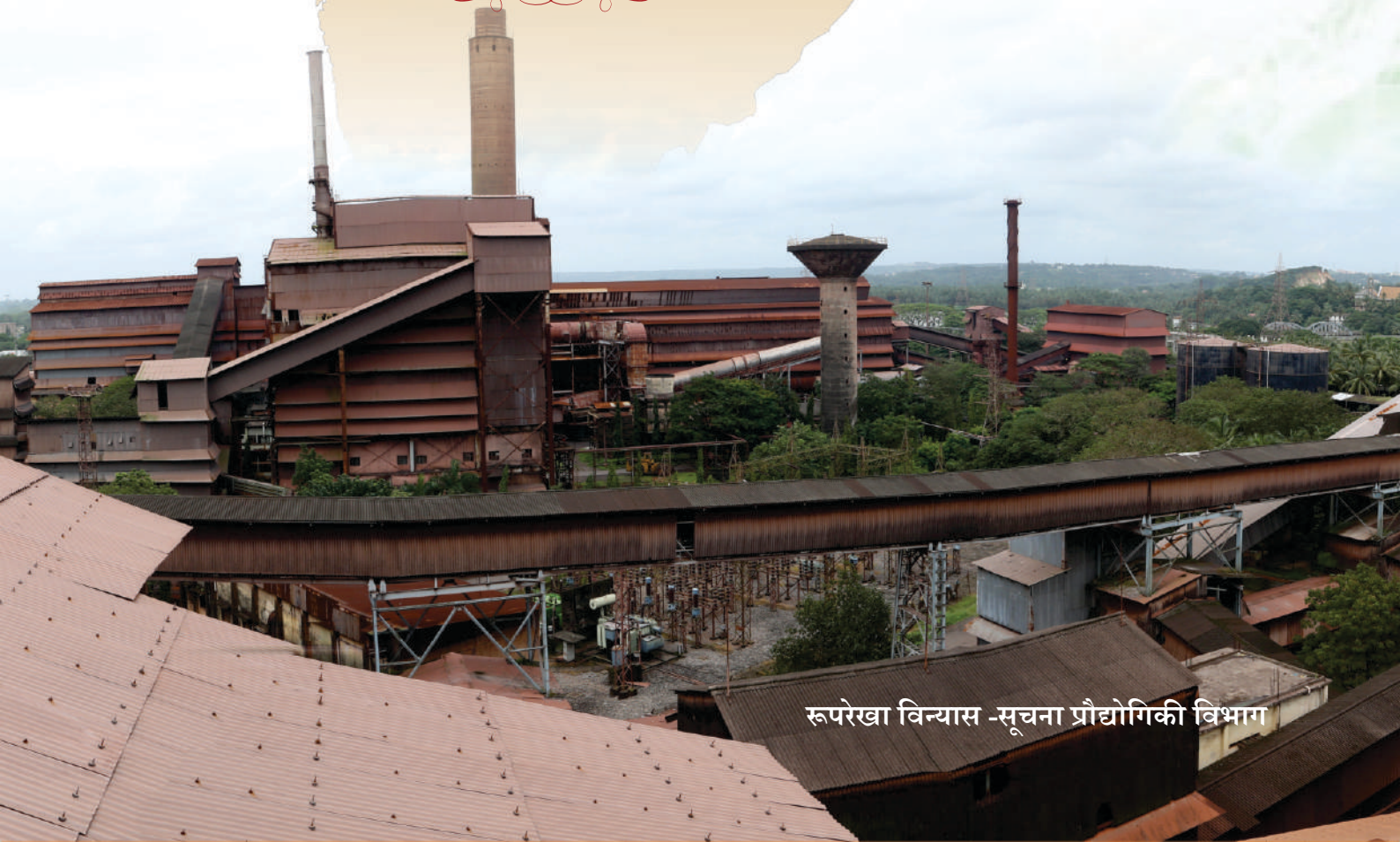

रूपरेखा विन्यास -सूचना प्रौद्योगिकी विभाग